सच हम नहीं सच तुम नहीं

सुप्रसिद्ध कवि, , नयी कविता के प्रवर्तक डॉ.जगदीश गुप्त के नाम से हिंदी साहित्य जगत भली-भाँति परिचित है | नयी कविता के "सैद्धांतिक पक्ष" को लिपिबद्ध करने में डॉ.जगदीश गुप्त का अप्रतिम योगदान रहा | सच हम नहीं सच तुम नहीं कविता में उन्होंने वास्तविक सच जीवन में निरंतर संघर्ष को माना है।

संदर्भ -प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ **सच हम नहीं सच तुम नहीं** कविता से ली गयी है। इसके लेखक **डॉ.जगदीश गुप्त** जी है।

सच हम नहीं---------- है जीवन वही ।

कवि कहते है कि मेरा या तुम्हारा सच वास्तव में सच नहीं है असली सच तो निरंतर संघर्ष में है

जो व्यक्ति इन संघर्षों के आगे झुक गया, उसे मृत ही समझना चाहिए जिस प्रकार डाली से झर कर गिरने वाले फूल के जीवन में कुछ शेष नहीं बचता ,वही स्थिति बिना संघर्ष किए हुए मनुष्य की होती है। जो लोग अपने लक्ष्य को कभी नहीं भूलते ,जो कभी हार को देखकर भी नहीं झुकते हैं ऐसे ही लोग मृत्यु को भी जीत लेते हैं और उनका ही जीवन श्रेष्ठ है क्योंकि वे निरंतर संघर्ष करते हैं।

सच हम नहीं---------- सच तुम नहीं।

कवि कहते हैं जीवन में हमेशा गति बनी रहनी चाहिए, प्राणों में जड़ता नहीं आनी चाहिए। व्यक्ति को यदि अकेले भी संघर्ष करना पड़े तो उसे करना चाहिए चाहे जैसी भी परिस्थिति क्यों न हो। चाहे जीवन में कांटे मिले चाहे कलियां खिले अर्थात चाहे सुख मिले या दुख इंसान को संघर्षों से हार नहीं माननी चाहिए। यही यौवन का संदेश है।

हमने रचा आओ ---------- सच तुम नहीं।

हमने इस प्यार को बनाया है और आओ अब हम ही इसे तोड़ दे क्योंकि ऐसे मिलन का कोई अर्थ नहीं जो संघर्ष में साथ ना दे असली मिलन तो वह है जो मझधार में अर्थात संघर्ष में साथ खड़ा रहे। कवि ऐसे लोगों पर टिप्पणी करता है कि जो लोग फूलों के साथ चले अर्थात अच्छे दिनों में साथ रहे और ढाल पाते ही ढले अर्थात बुरे दिनों के आते ही उन्होंने साथ छोड़ दिया ऐसे लोगों से संबंध तोड़ देना ही अच्छा है। कवि कहता है ऐसे जिंदगी का भी कोई अर्थ नहीं जो सिर्फ पानी सी बहती रहे जिसका अपना कोई भी ध्येय न हो।

अपने हृदय का ---------- सच तुम नहीं।

कवि कहते है हमारे जीवन का सत्य क्या है ये हमको स्वयं ही खोजना होगा। हमें खुद ही अपने आंखों के आंसुओं को पोछना होगा अर्थात अपने दुख और तकलीफों का निदान हमें स्वयं ही करना होगा। यदि कोई सोचे कि किसी दैवीय चमत्कार से उसके दुख समाप्त हो जाएंगे तो यह उनका भ्रम है। मनुष्य को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हर राही को भटकने के बाद ही दिशा मिलती है अर्थात संघर्ष करने के बाद ही व्यक्ति को सफलता मिलती है

बेकार है मुस्कान ---------- सच तुम नहीं।

कवि कहता है कि यदि हृदय में दुख हो तो ऊपर मुस्कान से उसे ढकना उचित नहीं है। यह व्यर्थ है क्योंकि यदि मन दुखी है और हम बाहर से अपने दुख को न बताएं और नकली खुश होने का नाटक करे तो यह स्थिति आदर्श नहीं हो सकती। व्यक्ति को दोहरे व्यक्तित्व के साथ नहीं जीना चाहिए। कवि कहता है कि जब तक हमारे मन में चेतना है, तभी तक हमें प्रणय के दुख की अनुभूति होती है इसलिए इस राह में भावुक होने को वो सही नहीं मानता क्योंकि वह कहता है कि मेरा या तुम्हारा सच ही असली सच नहीं है असली सच तो निरंतर संघर्ष में है।

विशेष -

1 साहित्यिक खड़ी बोली

2 कवि ने निरंतर संघर्ष में ही जीवन की सार्थकता बतायी है।

3 अनुप्रास अलंकार

4 सुन्दर प्रतीक विधान